# लक्ष्य के साथ विधि भी अच्छी हो

संसार में कई ऐसे लोग होते हैं, यदि उनके साथ न्याय नहीं हुआ तो जोश में आ जाते हैं। क्रोध में आकर कुछ कर बैठते हैं। वे नहीं समझते हैं कि ठीक है, उनको न्याय नहीं मिला, लेकिन उसके लिए क्रोध में आना, अत्याचार कर बैठना, यह भी तो न्याय नहीं है ना! अच्छा प्राप्त करने के लिए खराब काम कर लेते हैं, यह ठीक नहीं है, उचित नहीं है। हमारा लक्ष्य भी अच्छा होना चाहिए और उसको प्राप्त करने की विधि भी अच्छी होनी चाहिए। यह हमने देखा है कि इसमें भी हम धोखा खा लेते हैं। ऐसा कई बार देखने में आता है कि होनी चाहिए। वो न होकर हम नीचे की अवस्था में, देह-अभिमान की अवस्था में आ जाते हैं।

हमारे सामने ज़रूर एक मूल्य होता है, फलाना आदमी इतने सालों से ज्ञान का पठन-पाठन करते हुए भी कई लोगों को परेशान कर रहा है। इसको कोई कुछ नहीं बोल रहा है, हम इसको कुछ बोलें, हम इसको ठीक कर दें। ऐसे वक्त पर सवाल यह उठता है कि यह ज़िम्मेवारी आपको किसने दी है? ऐसी परिस्थिति में परमात्मा ने हमें बताया है कि 'लॉ अपने हाथ में नहीं उठाओ। मैं न्यायकारी हूँ, मैं बैठा हूँ, मैं देखूंगा। आप अपना फर्ज़ पूरा करो।

**हम में कोई कमी-कमज़ोरी आने पर यदि हमें कोई समझाता है, मार्गदर्शन करता है, इशारा देता है, तो उसको हमें स्वीकार करना चाहिए, लेकिन हम उसको नकार देते हैं। हम स्वयं को ही सही सिद्ध करने की कोशिश करते हैं। इससे भी जो हमारी स्थिति बननी चाहिए वो नहीं बन पाती।**

जो व्यक्ति हमसे व्यवहार ठीक नहीं करते, हमारे पीछे ही पड़ जाते हैं, हमसे ईर्ष्या करते हैं, द्वेष करते हैं, नफरत करते हैं, मान लो किसी वजह से हमारा और उनका स्वभाव-संस्कार नहीं मिलता, इसके लिए परमात्मा ने कहा है कि उनके प्रति हमें मधुरता, सहनशीलता, क्षमा, संतोष और मिलनसार आदि गुणों को धारण करना चाहिए। पर प्रैक्टिकली देखा जाता है कि इसके बदले उनकी बात या व्यवहार देख हम भी उत्तेजित होकर बोलने लगते हैं और उसी तरह का व्यवहार करने लगते हैं। जबकि हमारी स्थिति फरिश्ता स्वरूप की या ज्योतिर्बिन्दु शांत प्रभामंडल की आपके लिए जो धारणा बताई है उनको धारण करो। मैंने जो स्थिति बनाने के लिए कहा है वो बनाओ।' ऐसे हालात बनने पर धारणा करने में भी हम देखते दूसरों को हैं। अपने आसुरी गुणों को छोड़ने के लिए जो पुरुषार्थ करना है उसके लिए भी हम दूसरों को देखते हैं। इससे हम अपने दिव्य गुणों को खो बैठते हैं। अपनी स्थिति से नीचे आ जाते हैं। इसके बाद क्या होता है, उस व्यक्ति का चित्र मन में वैसा ही आता है जैसा वो हमसे व्यवहार कर रहा होता है, कि ये व्यक्ति ऐसा है! हमारे अंदर जो चित्र आना चाहिए हमारे फरिश्ता स्वरूप का, शांत प्रभामण्डल का, सारी सृष्टि को सकाश देने का, वो चित्र समाप्त हो जाता है। जब आपके विचार नेगेटिव में बदल जाते हैं तो आपके मन में आने वाला चित्र भी नेगेटिव में बदल जायेगा। इसलिए अपने सामने श्रेष्ठ चित्रों को कायम रखें या मूल्यों को कायम रखें तो निश्चित रूप से वो हमारी स्थिति बन जायेगी जो परमात्मा हमसे चाहते हैं।

कई बार ऐसे भी हालात होते हैं जो हमारे में कोई कमी-कमज़ोरी आ जाती है, जिसका इशारा कोई हमसे बड़े देते हैं, पर हमारा ध्यान उसपर नहीं है। हमारा ध्यान उसपर है जिसको हम ठीक समझ रहे हैं, जिससे हमें रुकावट पड़ रही है। परिणामस्वरूप जो स्थिति होनी चाहिए वो है नहीं। उसमें हमें कोई समझाता है, मार्गदर्शन करता है, इशारा देता है, तो उसको हमें स्वीकार करना चाहिए, लेकिन हम उसको नकार देते हैं। हम स्वयं को ही सही सिद्ध करने की कोशिश करते हैं। इससे भी जो हमारी स्थिति बननी चाहिए वो नहीं बन पाती। समझते हुए भी उसको हम नहीं मानते हैं, क्योंकि हम समझते हैं कि आगे के लिए हमारे व्यक्तित्व पर दाग लग जायेगा। लोग समझेंगे कि देखो, इसने अपनी गलती मान ली, उनके सामने अपनी हार स्वीकार कर ली। इससे कई बार हमारा विकास रुक जाता है। परमात्मा(बाबा) ने जो लक्ष्य दिया है, अगर उस श्रेष्ठ चित्र को सामने रखकर, उपरोक्त बातों का ध्यान रखते हुए पुरुषार्थ करते हैं तो हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।

तो कहने का भाव यही है कि हमारा लक्ष्य अच्छा भी होना चाहिए और उसको प्राप्त करने की विधि भी अच्छी होनी चाहिए। न कि देहभान के वश, समझते हुए भी इसे दरकिनार करें। क्योंकि स्व के कल्याण के साथ विश्व का भी कल्याण, ये हमारा मूल मंत्र है। इसी में ही हमारा विकास समाया हुआ है। तो साधना की बारीकियों में कई बार ऐसी परिस्थितियां सामने आती हैं जहाँ पर एक दिव्य गुण को बनाये रखने के लिए हम दूसरे दिव्य गुण का दमन करते हैं। अगर सही मायने में हमें आगे बढ़ना है तो बाबा की बतायी हुई शिक्षाओं पर चलते हुए उसे फॉलो करें, तब ही हमारा सही विकास होगा, सफल होंगे और अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे।

## ! यह जीवन है !

**जिस प्रकार ज़हर इंसान के जीवन का हरण कर लेता है, ठीक उसी प्रकार नकारात्मकता हमारी रचनात्मकता को तो कमज़ोर बनाती ही है, साथ ही हमारे उमंग-उत्साह और खुशी का भी हरण कर लेती है। अतः हमें जितनी जल्दी हो सके अपने दिल-दिमाग को नकारात्मकता के चक्रव्यूह से तुरंत बाहर निकाल कर, जीवन को रचनात्मक बहाव में बहने लायक दिशा देनी चाहिए। और अगर हमारा जीवन अनेक बोझों से युक्त है, तो उन सभी बोझों को खुलकर प्रभु को अर्पण कर देना चाहिए, तभी हम पूरी तरह से हल्के हो जाएंगे और सदा खुश रहेंगे।**

मथुरा-रिफाइनरी नगर(उ.प्र.)। मथुरा रिफाइनरी के कार्यकारी निदेशक एवं रिफाइनरी प्रमुख आशीष कुमार माइति को रक्षासूत्र बांधते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. कृष्णा बहन।

राय पिथौरागढ़-उत्तराखण्ड। नरेन्द्र कुमार,कमाण्डेंट,इंडो तिब्बतन बोर्डर पुलिस को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. कनिका।

राजगढ़-म.प्र.। पुलिस अधीक्षक प्रदीप कुमार शर्मा को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मधु बहन।

समस्तीपुर-शाहपुर पटोरी(बिहार)। धनिक लाल मंडल, प्रोफेसर,ए.एन.डी. कॉलेज को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रंजना बहन।

कालपी-उ.प्र.। कालपी के विधायक एवं कोतवाल को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया व ज्ञानामृत पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. ममता बहन, ब्र.कु. ललिता बहन तथा ब्र.कु. अनुराग भाई।

मुन्द्रा कच्छ-गुज.। नगर पालिका प्रमुख किशोर सिंह परमार तथा कारोबारी चेयरमैन डाहयालाल आहिर को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. सुशीला बहन, ब्र.कु. चमन भाई, ब्र.कु. मुकेश भाई तथा अन्य।

कमालगंज-उ.प्र.। तहसीलदार राजू कुमार को रक्षासूत्र बांधते हुए उपसेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. उषा बहन।

मुम्बई-श्री नगर(ठाणे)। सेवाकेन्द्र पर डॉक्टर्स व नर्सेस के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम में डॉक्टर्स को सर्टिफिकेट व शील्ड देकर सम्मानित करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सीता बहन। कार्यक्रम में राजाभाऊ सेठ,प्रेसीडेंट,एएनएनएसएस, डॉ. कंचन तलपड़े,टीएमसी हॉस्पिटल, डॉ. भोर,प्रेसीडेंट,वागले इस्टेट डॉक्टर्स एसोसिएशन तथा मोदी हॉस्पिटल, श्री हॉस्पिटल, ग्लोबल हॉस्पिटल व अष्टविनायक हॉस्पिटल सहित अन्य हॉस्पिटल्स के विभिन्न डॉक्टर्स शामिल हुए।